ISSN : 2321-6131 जुलाई-दिसम्बर, 2019
वर्ष : 7-8 अंक : 14-15 जनवरी-जून, 2020

समवेत ध्वनि संस्थान, उदयपुर

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

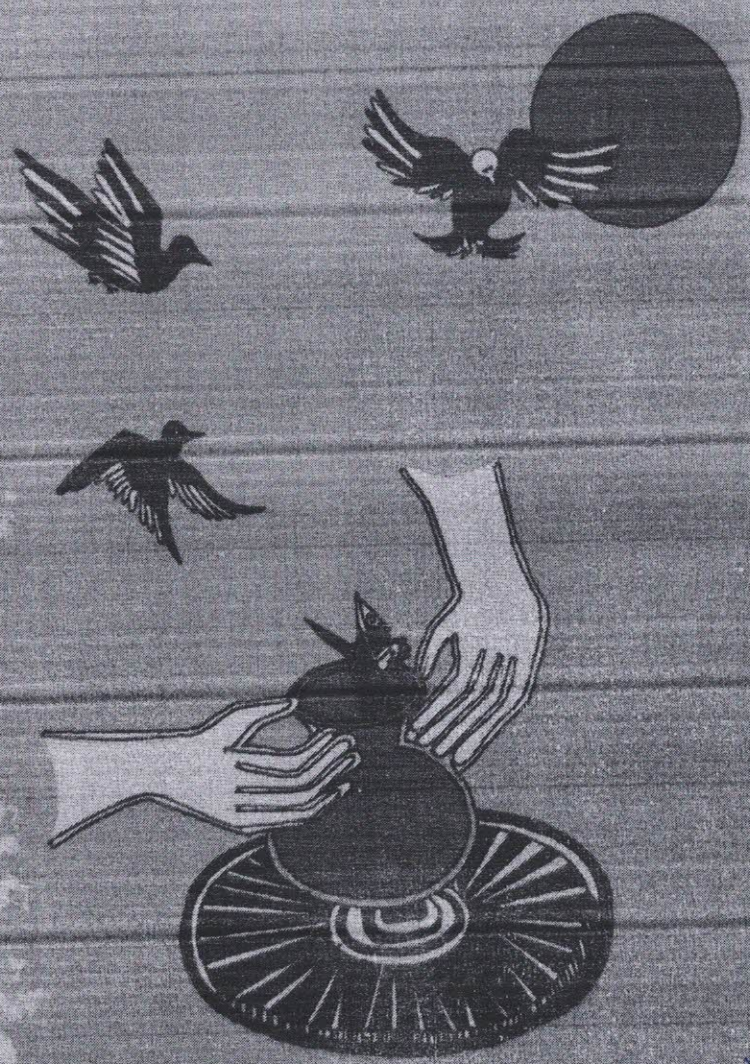

विशेषांक :
21वीं सदी का
हिंदी उपन्यास
खंड-2

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

अतिथि संपादक
डॉ. नीतू परिहार

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

अनुक्रम

1. दृष्टिकोण की विकलांगता और बदलाव की अपेक्षा : 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' 1
डॉ. संजय नवले

2. यह पथरीला दर्द काव्य का मुझ से सहा न जाता... 6
(काटना शमी का वृक्ष पद्मपंखुड़ी की धार से : सुरेंद्र वर्मा)
प्रभात कुमार मिश्र

3. 21वीं सदी के हर असिद्ध नायक के अन्तर्बाह्य जीवन का दस्तावेज : 'विनायक' 25
डॉ. अखिलेश चास्टा

4. हाशिए पर जीवन जीती तीसरी दुनिया का सच – 'तीसरी ताली' 32
डॉ. मनीषा शर्मा

5. पिंजरे से मुक्ति का संघर्ष : 'दस द्वारे का पींजरा' 41
डॉ. ईश्वर सिंह चौहान

6. गंगा-जमुनी तहजीब का दस्तावेज : 'पारिजात' 54
डॉ. संतोष विजय येरावार

7. 'जीरो रोड' समस्याओं से ग्रस्त रास्ता 60
प्रा. शेख परवीन बेगम शेख इब्राहीम

8. उत्तर-आधुनिक समय में किसान जीवन का महाकाव्य : 'फाँस' 67
डॉ. विनोद कुमार विश्वकर्मा

9. 'सेज पर संस्कृत' के सकारात्मक सरोकार 81
डॉ. अनीता नायर

10. विवेकानंद और वर्तमान : 'न भूतो न भविष्यति' 93
डॉ. नीता त्रिवेदी

11. इक्कीसवीं शताब्दी के वितान में बीसवीं सदी की दास्तान : 'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा' 105
डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल

DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR, Dist. Nanded

गंगा-जमुनी तहजीब का दस्तावेज : 'पारिजात'

डॉ. संतोष विजय येरावार*

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक विकास-यात्रा को देखा जाए तो समकालीन साहित्यिक लेखन का झुकाव जनसमुदाय केंद्रित हुआ है जिसमें सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन की यथार्थता पर अधिक बल दिया गया है। साहित्य आकादमी से पुरस्कृत नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' में एक ओर हिंदू-मुस्लिम समाज की गंगा-जमुनी तहजीब को दर्शाया गया है, तो दूसरी ओर इलाहबाद और लखनऊ जैसे शहरों की आबोहवा तथा लोगों की आपसी मोहब्बत के रिश्तों की बुनावट एवं गुरु-शिष्य के संबंधों को व्यक्त किया गया है। साथ ही साथ युवा जीवन की घटनाओं, घर-परिवार की विडंबनाओं को वर्तमान समय की विसंगतियों और कुरूपताओं के साथ चित्रित किया गया है।

जब भी विश्व में सांस्कृतिक एकता की बात होती है, तो भारत का जिक्र होना लाजमी ही है, क्योंकि आज भारत देश में अलग-अलग जाति एवं धर्म के लोग रहते हैं इसलिए भारत देश में विविधता में एकता दिखाई देती है। हिंदुस्तान में स्वतंत्रता पूर्व से हिंदू-मुस्लिम आपस में टकराने के पश्चात् भी मुहब्बत के रिश्ते में मिले हैं। इस मिलन के बाद यहाँ के संस्कारो में दो संस्कृतियाँ यूँ घुली-मिली है मानों दोनों एक-दूसरे की पूरक हो। वस्तुतः 'पारिजात' उपन्यास तीन गहरे मित्रों के परिवार की कहानी है। पहिला परिवार प्रो. प्रह्लाददत्त और प्रभादत्त का पुत्र रोहन है। दूसरा परिवार जुल्फिकार और नुसरतजहाँ का है जिनका पुत्र काजिम है। तीसरा परिवार बशारत हुसैन

* विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, ता. देगलूर, जिला-नांदेड़ (महाराष्ट्र)

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

और फिरदौस जहाँ का है जिनका एक पुत्र मोनिस और एक पुत्री रूही है, ये तीनों परिवार हिंदू-मुस्लिम एकता के साक्षात प्रतिबिंब हैं। जब तीनों परिवारो के बीच अकेली लड़की 'रूही' पैदा होती है तो हर कोई बेटी की तमन्ना पाल बैठा। तीनों परिवार के लोग 'रूही' को अपनी बेटी मानते थे। ''यह मेरी बेटी है।'' प्रल्हाद दत्त रूही को देखकर कहते हैं। तो यह चाँद तो मेरा है, जुल्फिकार उसे गोद में ले उछालते। लड़कियाँ तो घर की रौनक होती हैं। .... चारों बच्चे इस मोहब्बत के पालने में झूला-झूलते हुए बड़े सारे घर इनके अपने थे।'"

भारत एक विविधताओं वाला राष्ट्र है। यहाँ पर सभी वर्गों के लोग निवास करते हैं। भारतीय समाज के दो बड़े समुदाय हिंदू-मुसलमान के बीच परस्पर साहचर्य और भाईचारा नजर आता है, किंतु देश विभाजन के साथ पुराने सामाजिक संबंधों में खटास आ गई। इस देश की साझा संस्कृति भी बंटवारे का शिकार हुई। साम्राज्यवादियों द्वारा बोया गया सांप्रदायिकता का बीज तेजी से फलने-फूलने लगा और यह भारतीय राजनीति का अनिवार्य हिस्सा बन गया। मुसलमान समाज सभी स्तरों पर उपेक्षा का शिकार हुआ। 'पारिजात' उपन्यास में रोहन सलीम को फोन करता, ताकि उससे जर्मनी के कुछ हालात मालूम करे। रोहन सलीम से जर्मन कब जाने वाले हो कहता है ? तो सलीम पता नहीं इतना कहकर अजीब अंदाज में कहने लगा, जिसकी वजह से जर्मनी अच्छा लगने लगा था वही वॉक आउट कर रही हैं। क्यों ? ''दरअसल इस टेररिज्म के पीछे की सियासत जो भी हो मगर उसने मुसलमानों का इंटरनेशनल चेहरा बिगाड़ दिया है।''''[12] आज के दौर में इस्लाम धर्म को लेकर जो बहस छिड़ी हुई है, उसके संदर्भ में नासिरा शर्मा का यह उपन्यास अपना विशेष स्थान रखता है। नासिरा जी ने अपने उपन्यास 'पारिजात' में बताया है कि- ''इस्लाम एक मजहब नहीं, बल्कि एक पाकीजगी के साथ जीने का पैगाम बनकर आया है। जिसने सामाजिक बदलावों को ठीक नहीं समझा, उसने इस्लाम फैलाने वालों का विरोध किया। जिन्होंने उसे कुबूल किया तो अपनी आदतों को भी बदला। अत्याचार और अय्याशी, लापरवाही और जिहालत से किनारा किया।''[13] उपन्यासकार ने रोहन के पूर्वज राजादत्त द्वारा हजरत हुसैन का साथ देने की जो बात कही है। उसका मतंव्य इस्लाम के बारे में प्रचालित धारणाओं का खंडन करने के अलावा हिंदू-मुसलमानों के बीच पुराने सौहार्दपूर्ण संबंधो की याद दिलाना है। ऐसा करना आज के समय की आवश्यकता है। सांप्रदायिकता भारतीय राजनीति का अनिवार्य हिस्सा बन गई है। तुष्टीकरण की राजनीति और सांप्रदायिक धुव्रीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण निहित स्वार्थियों द्वारा धर्म की मनमानी व्याख्या से भी धर्म का चरित्र विकृत होता है। यह एक बड़ी चिंता का

 समवेत [ISSN : 2321-6131]

DAY VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR

कारण है। 'पारिजात' उपन्यास मे कहा गया कि ''कर्बला की लड़ाई में तो सुलतानवंश की भी हमकारी रही है। यजीद की लौटती फौजों से लड़े थे। यह तो भई ! उन्हीं के खानदान से है।''[14]

नासिरा शर्मा के 'पारिजात' उपन्यास में इलाहाबाद और लखनऊ की साझी संस्कृति के दर्शन होते हैं। जिस उल्लास से यहाँ दिपावली और रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाता है, उसी उत्साह से मोहर्रम भी। 'पारिजात' उपन्यास में सुमित्रा और फिरदौस जहाँ दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। सुमित्रा दिपावली का त्योहार मनाने के लिए फिरदौस जहाँ के घर आती हैं। सुमित्रा के जाने के बाद फिरदौस जहाँ को बचपन (ये उन दोनों ने जो नजीर की नज्म झूम-झूमकर पढी थी वह) याद आती है।

''हर एक मकाँ में जला फिर दीया दीवाली का,
हर एक तरफ को उजाला हुआ दिंवाली का।
खिलौने खेलों बतासों का गर्म है बाजार
हर एक दुकाँ में चिरागों की हो रही है बहार।''[15]

इस तरह 'पारिजात' उपन्यास में हिंदू-मुस्लिम धर्मों के गंगा-जमुनी तहजीब के दर्शन होते हैं। साथ ही इस उपन्यास में त्योहार, एक दूसरे के सुख-दुःख का दोनों धर्म के समुदाय ने स्वीकार किया है। इस तरह दोनो संस्कृतियों ने आपस में भेदभाव का व्यवहार कहीं पर भी नहीं किया है। साथ ही हिंदू-मुसलमानों के बीच वैमनस्य बढ़ाने वाली राजनीति, अंधविश्वास, कट्टरता, जड़ता संकीर्णता को ठेंगा दिखाने का प्रयास भी-इस उपन्यास के माध्यम से किया गया है।

'पारिजात' उपन्यास में तीनों परिवारों के बच्चे एक साझी संस्कृति में पले-बढ़े नजर आते हैं। रूही की शादी काजिम से होती है। बड़ा होकर रूही का भाई मोनिस विदेश में बसकर दरकिनार ही हो जाता है, अंदर वाले बाहरी नाते की तरह। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में वह अपने देश और रिश्तों से दरकिनार होता नजर आता है। जब रूही के पिता की मृत्यु हो जाती है, और उधर रूही के पति काजिम की मृत्यु हो जाती है, तब रूही और रूही की माँ फिरदोस जहाँ अकेले हो जाती हैं, उस समय विधवा रूही ही मायके में पाँव से अशक्त माँ व उनकी लाल कोठी तथा ससुराल में खुद की एवं सफेद कोठी की संरक्षिका का दायित्व निभाती है। एक जगह उपन्यास में रूही की माँ अपने बेटे मोनिस से कहती है कि- ''मैं तो ठीक हूँ बेटे! इधर मैं तन्हा! उधर तुम्हारी बहन तन्हा। ..... तुम कब आ रहे हो मेरे कलेजे! ये आँख तरस रही है!

नो मोर डायलॉग मॉम! उस शहर की ठहरी जिंदगी में मुझे आकर मरना नहीं है। आप बार-बार वही बात दोहराती हैं। आप और रूही के अलावा वहाँ मेरा अपना बचा कौन है ? किसके लिए यह सब छोड़ूं ? मेरे सारे दोस्त यूरोप भर मे फैले हुए हैं। मुझे बेकार के इमोशंस में मत उलझाइएँ ..... वह घर बोसीदा हो चुका है। वह सडकें और वह रास्ते टूट चूके हैं ..... मॉम डोंट क्राई। हमारी यादें, हमारा दिल व दिमाग और ये आँखे हैं। वह घर और शहर नहीं।'[16]

इस तरह आज लोग आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपने परिवार और अपने देश की संस्कृति से किस तरह कटते जा रहे हैं, इसका भी मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। उधर विदेशी पत्नी के जाल में फंसकर रोहन अपनी सारी पूँजी, इज्जत व बेटे को गंवाकर जेल की सजा काटता है। रोहन की माँ इसी गम में चल बसती है। इसी चक्कर में माँ-बाप अपनी सारी कमाई रोहन को बचाने में गंवा देते हैं। बेटे को छुड़ाकर वापस आई रोहन की माँ इसी गम में चल बसती है। रोहन लाचार होकर सब कुछ गवाकर अपने देश और पिता के पास इलाहबाद आता है, और वहीं से इस उपन्यास की शुरूआत होती है, रोहन के पिता के सपनों का महल; निजी बंगला भी बिक चुका है। वे अपने शिष्य निखिल व उसकी पत्नी शोभा, जो रोहन की माँ की शिष्या भी रही है, उनके घर रहते हैं। इस रूप से नासिरा जी ने एक ओर पुरानी परंपरा; गुरू-शिष्य संबंधों का भी दर्शन कराया है।

किस्सागोई में माहिर नासिरा जी का यह उपन्यास नए-पुराने रिश्तों की दास्तान है। इलाहाबाद और लखनऊ की जमीं पर बुने उपन्यास 'पारिजात' में नासिरा जी ने युवा चेतना के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास में तीनों परिवार के बच्चे 'हावर्ड' पढने जाना चाहते हैं। पर उनके माता-पिता इससे बहुत चिंतित नजर आते हैं क्योंकि यह युवा वर्ग सब कुछ बदलना चाहता है, उनमें पुराने के प्रति कोई लगाव नहीं। खासकर अपने अतीत से चिपके रहने वाली आदतों और दादा-परदादा के गुणगानों से थक चुके थे। उन सबको कुछ नया करने और कुछ नया तलाशने की चाह है। आज के समय में हम लोग जो 'जनरेशन गेप' की बाते करते हैं, उसे नासिरा शर्मा ने तीनों परिवार के बच्चों और माता-पिता के संवादों से बखूबी स्पष्ट किया है। यह वर्णन हमारे हृदय को छू जाता है। इस उपन्यास में मोनिस कहता है कि- "तरक्की करना और आगे बढ़ना हर इन्सान का फितरी अमल है और बुनियादी हक है। आप ही फरमाते थे कि जमीन खुदा की बनाई हुई है। सारी मख़लूक एक हैं तो फिर जमीन का कोई हिस्सा परदेस क्यों हुआ ? हम बाबा आदम के उसूलों और

VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S ... COLLEGE ...

तौर-तरीकों को लेकर चलें डैडी, तो इस गलाकाट दौड़ में रौंद दिए जाएँगे। हमें जमाने के साथ चलना होगा।''[7]

यहाँ युवा अपनी विरासत को छोड़, अपनी, जड़ों से भागते दूसरे मुल्कों में अपना वजूद तलाशते नजर आते हैं। रोहन कहता है कि- ''हम अपना फ्यूचर दाँव पर नहीं लगा सकते हैं। रहा अंग्रेजी की गुलामी का मसला तो वह आप देख रहे हैं कि हम कहाँ और वह कहाँ।''[8] यहाँ पर मोनिस और रोहन युवाओं का प्रतीक हैं जो अपनी जड़ों की ओर लौटना नहीं चहाते हैं। उनका लक्ष्य केवल आगे बढ़ना है। नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास में एक आदर्श भारतीय स्त्री और एक आदर्श बेटी के दर्शन रूही के माध्यम से कराएँ हैं। जब उपन्यास का युवा अपने माता-पिता के हृदय पर घात दे रहा था, तब रूही कहती है कि- ''तुम सब चुप रहो, इस तरह चीखो मत। हमारे माँ-बाप हमारे दुश्मन नहीं हैं। अपने मुल्क में एक जगह से दूसरी ज़गह जाने और दूसरे मुल्क की सरहद में दाखिल होना दो अलग बातें हैं। बहस इस पर नहीं है कि वह हमें आगे बढ़ने या विदेश जाने पर रोक लगा रहे हैं, बल्कि वह हमारे वहाँ पर बसने पर अपना डर जताकर हमको आगा-पीछा, अच्छा-बुरा समझा रहे हैं। हमें उन्हें यकीन दिलाना होगा कि हम पढ़ने जा रहे हैं, न कि वहाँ बसने।''[9]

'पारिजात' उपन्यास में लेखिका ने भारतीय एवं पाश्चात्य 'माँ' का चित्रण किया है। इस उपन्यास में प्रभा और एलेसन दोनो माँ हैं। प्रभा अपने बेटे को अपने आँचल की शीतल छाया में सुरक्षित रखना चाहती है। वह अपने युवा बेटे को हर चिंता परेशानी से दूर रखना चाहती है। जब रोहन को छुड़ाने के लिए प्रभा और प्रह्लाददत्त की सारी जमा पूँजी खर्च हो जाती है तब वह प्रह्लाददत्त से कहती है कि- ''मेरे जेवर और यह मकान, चिंता न करें, जैसे ही रोहन कमाने लगेगा सब कुछ दुगनी रफ्तार से वापस मिल जाएगा।''[10] तो दूसरी ओर एलेसन अपने नवजात बेटे को बार-बार ट्रेंड करने की बात करती है, क्योंकि उसे बच्चे की परवरिश ममता के आँचल में नहीं बल्कि कामयाब महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति के सिस्टम में करनी है। रोहन को एलेसन का सारे दिन घर से बाहर रहना अखरता था। उसकी इच्छा थी कि बच्चे की परवरिश नौकरानी की जगह माँ करें। तब एलेसन को लगता है की रोहन बदल गया है। ''उसके देश में तो हर माँ बच्चे को छोड़कर काम पर जाती है। उसने यही सच बचपन से देखा था। वो दो माह के बच्चे को छोड़कर काम पर जाती है। वो दो माह के बच्चे को छोड़कर मीटिंग के सिलसिले में विदेश भी चली गई। वह एक अच्छी माँ से ज्यादा कॉरपोरेट वर्ल्ड की अच्छी वर्कर और अच्छी दोस्त थी।''[11] इस तरह नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास में दिखाया है कि पश्चिम में नारी मात्र पत्नी के

रूप में जानी जाती है और उसमें स्वच्छंदता अधिक दिखाई पड़ती है जबकि भारत में उसकी छवि माँ की होती है। इस तरह नासिरा शर्मा का 'पारिजात' उपन्यास हिंदू-मूस्लिम संस्कृति का सेतु है। रोहन और रूही बचपन के मित्र हैं। उपन्यास के अंत में दोनों आपसी सहमति से विवाह के बंधन मे बंध जाते हैं। यह उन दोनों की जिंदगी का नया मोड़ नजर आता है। रोहन अपनी जिंदगी में एलेसन से अपमान और दगा पा चुका था। रूही तन्हा और बेजान जिंदगी जी रही थी। इस तरह से दोनों विवाह बंधन में जुड़कर अपनी उलझनों और समस्याओं का हल ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। रूही चाहती थी कि उसके गर्भ में काजिम जन्म ले। रोहन को उसका पारिजात अवश्य मिले।

इस तरह से नासिर शर्मा का उपन्यास 'पारिजात' राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य को अपने में समाहित किए हुए हैं। इसमें लेखिका ने वैश्विक धरातल पर शहरों की समस्याओं का चित्रण किया है। साथ ही विभिन्न राष्ट्रों की समस्याओं को भी उठाया है। हिंदू-मुस्लिम दोनों संस्कृतियों के सामंजस्य और सांप्रदायिक सौहार्द को प्रस्तुत करने मे 'पारिजात' पूर्णतया सक्षम है। साथ ही 'पारिजात' उपन्यास में मानवीय रिश्तों की गरिमा, धार्मिक रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक उत्सवों का वर्णन तथा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के दर्शन होते हैं। निःसंदेह ही नासिरा शर्मा का यह उपन्यास उनके सृजनात्मकता का निचोड़ है।

संदर्भ सूची

1. नासिरा शर्मा : *पारिजात*, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012, पृष्ठ 35
2. वही, पृष्ठ 127
3. वही, पृष्ठ 99
4. वही, पृष्ठ 83
5. वही, पृष्ठ 149
6. वही, पृष्ठ 136
7. वही, पृष्ठ 33
8. वही, पृष्ठ 33-34
9. वही, पृष्ठ 34
10. वही, पृष्ठ 37
11. वही, पृष्ठ 204

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

□□□